ISSN 2320-2858 UGC Journal No. 42684 अगस्त 2023

वर्ष - 11 अंक - 129

श्री श्री नरहरि सेवा संस्थान

प्रत्यक्ष दर्शी लोकस्य सर्वदर्शी भवेन्नरः

ब्रज लोक संपदा

सौजन्य : गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी, वृन्दावन

गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी सभागार में
सांसद हेमा मालिनी जी महिला शिल्पियों के मध्य

~O bmH g|nXm

साहित्य, कला, संस्कृति, मानविकी एवं समाज विज्ञान की अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

संपादक :

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

★

सह-संपादक :

चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

★

सहयोग :

डॉ. रश्मि वर्मा

कार्यालय :

ब्रज लोक संपदा कार्यालय, 302, गुरुकुल रोड, वृन्दावन

मो. : 09410619265, 7017709490

Website : www.brajloksampada.com ⋆ E-mail : brajloksampada@gmail.com

स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा द्वारा चौधरी प्रिंटिंग प्रेस, ब्रह्मकुण्ड, वृन्दावन, मथुरा से
मुद्रित कराकर 302, गुरुकुल मार्ग, वृन्दावन (मथुरा) से प्रकाशित।

ब्रज लोक संपदा भारतीय संस्कृति के मासिक शोध-पत्र की पृष्ठभूमि में हमारा यह सद् प्रयास है कि भारत की क्षेत्रीय कला व साहित्य का प्रज्ञात कलेवर परिवेषण कर राष्ट्रीय भावात्मक एकता के सूत्र को परस्पर संस्कृति के आदान-प्रदान से पुष्ट करें; इसी से व्यक्ति का व्यक्तिवाद शिथिल होकर समन्वित भाव से लोक अस्मिता के रूप में विकासोन्मुख नव जीवन का स्वरूप ग्रहण करेगा।

आवेदन - पत्र

कृपया मैं व्रजलोक संपदा पत्रिका का एक वर्ष का सदस्य बनना चाहता/चाहती हूँ। सदस्यता शुल्क.....नकद/चैक/ड्राफ्ट नं.....
दिनांक .....संलग्न है।

श्री/श्रीमती/.....

पिता/पति का नाम.....

जहाँ पत्रिका मंगाना चाहते हो वहाँ का पूरा पता .....

.....

पिन..... दूरभाष/मो०.....

हस्ताक्षर

(कृपया उक्त आवेदन पत्र को हाथ से लिखकर या टाईप कराकर भेज सकते हैं)

सदस्यता शुल्क

एक प्रति- 100/-, एकवर्षीय - 1100/-

विशेष: अपना चैक/ड्राफ्ट: ब्रज लोक संपदा के नाम से

302, गुरूकुल रोड, वृन्दावन, मथुरा, उ.प्र., पिन: 281121 पर भेजें।

बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक

शाखा - प्रेम मंदिर के सामने, वृन्दावन

खाता संख्या - 41957705984

आईएफसी कोड - SBIN0016533

प्रकाशित आलेखों के विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध पत्रिका से सम्बन्धित सभी विवाद केवल मथुरा न्यायालय के अधीन होंगे।

संपादकीय

डॉ. उमेश चन्द्र शर्मा

श्रीमद्भगवद् गीता का ज्ञान स्वयं में एक रहस्य है, जो इसके रहस्य को जानने में सक्षम होता है। वस्तुतः वही ज्ञानी होता है। जीवन का जो भाव है, वही उसका यथार्थ है। जो अभाव है वही उसका आदर्श है। मानव समाज आदर्श का चिर आकांक्षी रहा करता है। यथार्थ जीवन में प्राप्त होने वाला आनन्द अपूर्ण एवं अस्थाई होता है; इसलिए मनुष्य ऐसे आदर्श व आनन्द की कल्पना एवं उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है जो पूर्ण तथा चिर स्थाई हो। यथार्थ जीवन का प्रेम-पात्र नश्वर एवं क्षण- क्षण क्षय होने वाला है। अतएव प्रेमीजन ऐसे आदर्श प्रेम-पात्र की कल्पना एवं खोज करते हैं, जो शाश्वत हो। मानव के जीवन में इस आदर्शवादी प्रवृत्ति का इतना व्यापक प्रभाव है कि अक्षय सौन्दर्य अनन्त आनन्द, अमर प्रेम और अविनाशी प्रेम-पात्र को पाने की आशा में मानव स्वेच्छा या सुख-सुविधाओं को त्याग कर अकिंचन बन जाता है और उस अकिंचनता में उसे सन्तोष भी मिलता है।

अन्तर्वस्तु

1.	श्रीमद्भगवद् गीता	05
2.	आधुनिक युग में श्रीमद्भगवद् गीता – *श्री वृन्दावन चन्द्र दास*	06
3.	माँ गीता – *डॉ. राजेन्द्र*	10
4.	सनातन धर्म की मूलाधार : गौ माता – *लालू जी (गौ सेवक)*	14
5.	ब्रह्मांचल पर्वत पर राधारानी के दर्शन के लिए अब रोप–वे – *चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार*	16
6.	उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने टेर कदम्ब को बनाया रमणीक – *चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार*	19
7.	रासलीला की प्रस्तुति देख मुग्ध हुईं सांसद हेमा मालिनी जी – *चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार*	21
8.	कृष्ण भक्ति काव्य में रसखान का स्थान – *डॉ. सईद अहमद 'सईद'*	22
9.	संस्कृत भाषा से युवाओं में संस्कारों का बीजारोपण – *श्रीमती राजकुमारी*	26
10.	ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा – *सुनील शर्मा*	29

श्रीमद्भगवद्गीता

तेषामहं समुद्धर्ता मृत्युसंसारसागरात्।
भवामि नचिरात्पार्थ मय्यावेशितचेतसाम्॥

हे अर्जुन! उन मुझमें चित्त लगाने वाले
प्रेमी भक्तों का मैं शीघ्र ही मृत्युरूप
संसार-समुद्र से उद्धार
करने वाला होता हूँ॥12.7॥

आधुनिक युग में श्रीमद्भगवद् गीता

श्री वृन्दावन चन्द्र दास

हम तकनीक और नवीन धारणाओं के साथ सबसे तेजी से बढ़ती दुनिया में रह रहे हैं, पर हम जान बूझकर या अनजाने में अपनी मूल संस्कृति और जड़ों से अलग हो रहे हैं। हम सोचते हैं कि शास्त्र, भगवद्गीता इत्यादि तो केवल ब्राह्मणों, संतों, ब्रह्मचारियों और सेवानिवृत लोगों के लिए प्रासंगिक है और मूल रूप से त्यागी लोगों के लिए है, न कि गृहस्थी लोगों के लिए, व्यापारियों के लिए या नौकरीपेशा वाले लोगों के लिए। लेकिन आपको जानकारी होगी भगवद्गीता भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को सुनाई थी, जो स्वयं एक गृहस्थी थे, अर्जुन विवाहित व्यक्ति था, जिसके बच्चे भी थे और क्षत्रिय का कार्य करता था। वह कोई सन्यासी नहीं था। अर्जुन की स्थिति ठीक वैसी ही थी, जैसी आज हम लोगों की है। अर्जुन युद्ध के मैदान के बीच में, दुविधा में थे और धर्म की रक्षा करने के अपने कर्तव्य का त्याग करने के लिए विचार कर रहे थे। वे अपनी पहचान को भूल रहे थे जिस कारण से उनको संकट का सामना करना पड़ रहा था। उनकी बुद्धि और मन के बीच एक परस्पर विरोधी

स्थिति थी। युद्ध के मैदान में होने वाली चिंता, तनाव, भय, आत्मघाती विचारों और अवसाद के कारण वह निर्णय लेने में सक्षम नहीं थे।

उपरोक्त प्रमुख शब्द- भय, तनाव, चिंता आदि हमारे और अर्जुन के जीवन में समान है। आज हम इन्हीं परिस्थितियों का सामना इस आधुनिक युग में कर रहे हैं। वास्तव में आपके मन में क्या आ रहा है? क्या आप यह नहीं सोच रहे हैं कि आप भी अपने दैनिक जीवन में इसी स्थिति से पीड़ित हैं?

चूँकि अर्जुन निराशा की स्थिति में थे, उन्होंने अपने मानसिक संकट को दूर करने के लिए भगवान श्रीकृष्ण की शरण ली, इसीलिए भगवान श्रीकृष्ण ने उनके मन को सशक्त बनाया और उसे आध्यात्मिक ज्ञान और प्रेरणा से समृद्ध किया, जिसके परिणामस्वरूप अर्जुन के द्वारा एक मजबूत और धार्मिक निर्णय लिया गया। श्रीकृष्ण के मार्गदर्शन के बाद अर्जुन अपने शोक और विलाप से बाहर आने में सक्षम हो गया। इसलिए यहाँ हमें यह समझने की आवश्यकता है कि भगवद्गीता आयु, लिंग, जाति, कर्म, कर्त्तव्य आदि से परे है। चाहे आप 10 वर्ष के हों या 20 वर्ष के, 30 के हो या 40 के भगवद्गीता आपके लिए है। चाहे आप व्यापारी हों या नौकरीपेशा, आप वकील हों या डॉक्टर, आप जवान हों या बुजुर्ग, स्त्री हों या पुरुष भगवद्गीता आपके लिए है। यदि आपको कोई पूछे कि आपको पैसों की जरूरत कब है? तो आप कहेंगे अभी है, अभी दे दो। इसी तरह आध्यात्मिक ज्ञान की भी हमें अभी जरूरत है। बुढ़ापे तक इंतजार मत कीजिए क्या पता कब किस की मृत्यु हो जाए।

ज्ञान प्राप्त करने का स्वर्ण युग हमारी युवावस्था में है, ताकि हम इसे अपने जीवन में लागू कर सकें और फिर अपने बुढ़ापे में इसका अनुभव कर सकें। यही कारण है कि ईशो-उपनिषद में लिखा है कि पाँच वर्ष की आयु से ही हमें यह ज्ञान ग्रहण करना शुरू कर देना चाहिए, जहाँ बच्चे को आध्यात्मिक और भौतिक ज्ञान एक साथ देना होता है।

भगवद्गीता जीवन की विवरणिका है, जो हमें बताती है कि इस जीवन का लक्ष्य क्या है? भगवद्गीता हमें भ्रम, उदासी, आत्मघाती विचार आदि जैसी समस्याओं से बाहर निकालती है और आनंद और खुशी की ओर अग्रसर करती है। अज्ञानी प्राणियों के रूप में हम जिन समस्याओं का सामना कर रहे हैं, उनसे निपटने की शक्ति और प्रेरणा प्रदान करती है। गीता का यह ज्ञान अपने आप में एक रहस्य है परन्तु एक बार जो इस रहस्य को जान जाता है वह समस्त दुखों से मुक्त हो जाता है। निम्न श्लोक में भगवान् श्रीकृष्ण इस बात की पुष्टि करते हैं-

इदं तु ते गुह्यतमं प्रवक्ष्याम्यनसूयवे।
ज्ञानं विज्ञानसहितं यज्ज्ञात्वा मोक्ष्यसेऽशुभात्॥

(भागवत गीता 9.1)

भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा– "मेरे प्रिय अर्जुन, क्योंकि तुम मुझसे कभी ईर्ष्या नहीं करते, मैं तुम्हें यह सबसे गोपनीय ज्ञान और अनुभूति प्रदान करूंगा, जिसे जानकर तुम भौतिक अस्तित्व के दुखों से मुक्त हो जाओगे।"

सरल शब्दों में आधुनिक युग में पूर्णत: प्रासंगिक और प्रामाणिक भगवद्गीता के ज्ञान से हमारे जीवन की सभी अशुभताओं को दूर किया जा सकता है। चूँकि गीता हमारे जीवन में एक मार्गदर्शक पुस्तक और नियमावली है, इसलिए हम आसानी से एक आनंदमय जीवन जी सकते हैं और इस मनुष्य जन्म को सार्थक कर सकते हैं।

शास्त्रों में बताये हर नियम सत्य हैं परन्तु हमें वह कड़वे लगते हैं। हम आमतौर पर कहते हैं कि सच कड़वा होता है, जो सही नहीं है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति बीमार पड़ता है और दो महीने से बिस्तर पर पड़ा होता है और अच्छा और स्वादिष्ट भोजन या व्यंजन खाने की कोशिश करता है, तो वह अंतत: यह कहकर इनकार कर देगा कि यह स्वादिष्ट नहीं है। इसलिए समस्या खाने के स्वाद में नहीं बल्कि व्यक्ति में है। उसी भोजन के स्वाद की सराहना होगी यदि हम उसे किसी स्वस्थ व्यक्ति को दें। इसी प्रकार सत्य कभी कड़वा नहीं होता; यह हमेशा मीठा रहा है और हमेशा मीठा रहेगा। कड़वाहट हममें इसलिए है क्योंकि हम अज्ञानी हैं और इस मानव जीवन की वास्तविकता और महत्व को छिपाते हैं।

वास्तव में हमें दृष्टि बदलने की आवश्यकता है, सृष्टि की नहीं। यह आध्यात्मिक ज्ञान आपके दुनिया को देखने के तरीके को बदल देता है। उदाहरण के लिए यदि कोई 12वीं कक्षा में है, तो दुनिया के बारे में उनकी दृष्टि बिल्कुल अलग होगी और जब वही व्यक्ति एमबीबीएस करेगा तो उनकी दृष्टि पूरी तरह से बदल जाएगी (सृष्टि नहीं दृष्टि बदलो)।

कलियुग के इस आधुनिक युग में हमारे पास केवल 6 प्रतिशत वेद बचे हैं, जिसका अर्थ है कि 94 प्रतिशत पहले ही लुप्त हो चुके हैं। सरल शब्दों में आधा ज्ञान, ज्ञान न होने से भी बदतर है। फिर प्रश्न उठता है कि मैं आध्यात्मिक ज्ञान कहाँ से प्राप्त करूँ? इसका उत्तर देने के लिए आदि शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, माधवाचार्य, निम्बार्काचार्य, विष्णुस्वामी, बल्लभाचार्य और चैतन्य महाप्रभु सभी ने स्पष्ट रूप से उल्लेख किया है कि भगवद्गीता सभी वेदों का सार है। भगवद्गीता का दूसरा नाम गीतो उपनिषद है जिसका अर्थ है कि जब हम गीता के इस ज्ञान को समझेंगे तो हमारे जीवन का कोई भी प्रश्न अनुत्तरित नहीं रहेगा।

अब हम आपके सामने समाज के विख्यात हस्तियों के गीता के विषय में उनके विचार रख रहे हैं–

"अल्बर्ट आइंस्टीन"– मैंने इस तरह के विशाल ज्ञान के बारे में कभी नहीं सुना था।

"महात्मा गांधी"– जब संदेह मुझे सताता है, जब निराशा मेरे चेहरे पर आती है और मुझे आशा की एक भी किरण नहीं दिखती है तब मैं भगवद्गीता की ओर मुड़ता हूं और मुझे आराम देने के लिए एक श्लोक पाता हूं; और मैं तुरंत भारी दु:ख के बीच मुस्कुराना शुरू कर देता हूँ।

"राल्फ वाल्डो इमर्सन" (एक अमेरिकी लेखक और यूनिटेरियन मंत्री)– भगवद गीता पढ़ने से मेरा दिन सफल हो जाता है। यह ऐसा ज्ञान है जैसे एक साम्राज्य हमसे बात करता है, कुछ भी छोटा या अयोग्य नहीं, बल्कि बड़ा, शांत, सुसंगत, एक पुरानी बुद्धि की आवाज जो किसी अन्य युग और जलवायु में विचार करती थी और इस प्रकार उन्हीं सवालों का निपटारा करती है जो हमारी दिनचर्या में हमें परेशान करते हैं।

"रॉबर्ट ओपेनहाइमर"– भगवद्गीता किसी भी ज्ञात भाषा में विद्यमान सबसे सुंदर दार्शनिक गीत है।

आज के समय में हम सभी अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए लगे हुए हैं। कोई पैसे के पीछे भाग रहा है, कोई पढ़ाई के पीछे, कोई जीवन में स्थिरता के लिए बहुत मेहनत कर रहा है, लेकिन क्या हम वास्तव में प्रसन्न हैं? जवाब न है। क्योंकि हमें पहले यह समझना पड़ेगा कि हमारे जीवन का लक्ष्य आनंद प्राप्त करना है न कि धन, यश या संपत्ति के लिए आनंद प्राप्त करने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान के अलावा और कोई ज्ञान नहीं है।

चूँकि हमारे पास आध्यात्मिक ज्ञान नहीं है, इसलिए दु:ख, कलह और असुविधाएँ स्वत: आ जाते हैं। हमें यह समझने की आवश्यकता है कि हम एक आत्मा हैं, यह शरीर नहीं और जब तक हम आत्मा को आध्यात्मिक ज्ञान नहीं देंगे, हम दुनिया के सबसे अमीर व्यक्ति बनकर भी दुखी रहेंगे। हमारे दु:ख का कारण यह है कि हमने अपने चंचल मन के कारण जीवन की सभी अस्थायी भौतिक वस्तुओं से स्वयं को जोड़ लिया है, जो एक दिन स्वत: ही नष्ट हो जाएगी कुछ भी स्थायी नहीं है, लेकिन अगर हम खुद को भगवान कृष्ण से जोड़ लें, तो वे हमें कभी नहीं छोड़ेंगे इसलिए, हमें अपने मन को स्वयं कृष्ण में स्थिर करने की आवश्यकता है।

हमें अपने जीवन को सफल बनाने के लिए बिना किसी विचलन के प्रतिदिन भगवद्गीता पढ़ने की आदत डालनी चाहिए। जैसे कि बाजार में बहुत सारे अनुवाद हैं, परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण गीता में कहते हैं कि हमें भक्तों द्वारा अनुवादित गीता का ही अध्ययन करना चाहिए। अत: आप भगवद्गीता यथारूप का अध्ययन करें जो भक्तिवेदांत स्वामी ठाकुर श्रील प्रभुपाद द्वारा अनुवादित है।

★★★

माँ गीता

डॉ. राजेन्द्र

भारत की ज्ञान परम्परा सनातन है, जिसका आधार वेद है। इन्हीं वेदों का अन्तिम भाग वेदान्त या उपनिषद (ज्ञान काण्ड) है। भारतीय आध्यात्मिक सम्पदा में वेदान्त दर्शन सर्वोपरि है जो सृष्टि एवं विचारों की समग्रता एवं अखण्डता को स्वीकार करते हैं। इसी दर्शन परम्परा में तीन गीता प्रमुख मानी जाती है- अष्टावक्र गीता, उद्धव गीता और श्रीमद्भगवद्गीता, किन्तु भारतीय दर्शन और उपनिषदों के सार के रूप में 'श्रीमद्भगवद्गीता' का अपना अलग स्थान है। गीता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि गीता किसी विशेष विचार को लेकर नहीं चलती, अपितु इसकी दृष्टि व्यापक, उदार और बहुमार्गीय है। गीता प्रत्येक परिस्थिति में मानव मात्र को परमात्मा की प्राप्ति कराकर मनुष्य और संसार का कल्याण करना चाहती है। यह अन्यान्य दर्शनों की भाँति केवल सदाचरण के नियम, नैतिक उपदेश और मोक्ष प्राप्ति के उपाय के विषय में ही विचार नहीं करती, अपितु धर्म और अध्यात्म को समन्वित, समग्र और संपूर्णता के साथ प्रकट करती है।

श्रीमद्भगवद्गीता साक्षात् भगवान श्रीकृष्ण की वाणी है, जिसका जल अनादि काल से सभी की प्यास बुझा रहा है। गीता को जो जिस दृष्टि से देखता है, गीता उसे वैसे ही दिखने लगती है। गीता ज्ञान के साथ-साथ प्रत्यक्ष अनुभव भी कराती है। स्वामी रामसुखदास जी ने लिखा है- "श्रीमद्भगवद्गीता एक ऐसा विलक्षण ग्रन्थ है, जिसका आज तक न कोई पार पा सका, न पार पाता है। गहरे उतरकर इसका अध्ययन-मनन करने पर नित्य नये-नये विलक्षण भाव प्रकट होते रहते हैं। गीता में जितना भाव भरा है, उतना बुद्धि में नहीं आता। जितना बुद्धि में आता है, उतना मन में नहीं आता। जितना मन में आता है, उतना कहने में नहीं आता। जितना कहने में आता है, उतना लिखने में नहीं आता। गीता असीम है, पर उसकी टीका सीमित ही होती है।"

व्यास जी ने वेद रूपी समुद्र को बुद्धी रूपी मथानी से मथकर उसमें से गीता रूपी नवनीत निकाला। इसे ज्ञान रूपी आंच पर पकाकर गीता नाम का यह पथ्य रूप सुगन्धित घी तैयार हुआ है। जिस तरह पारस के स्पर्श से लोहा भी सोना बन जाता है, मृत व्यक्ति अमृतपान से जी उठता है, माँ सरस्वती की कृपा से गूंगा भी बोलने लगता है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं, जिसकी माँ कामधेनु (गीता) हो, उसके पास किसी की कमी नहीं।

श्रीमद्भगवद्गीता पर अनेक अधिकार प्राप्त संतों-ऋषियों-मुनियों ने टीका लिखी है, जो अपने-आप में पूर्ण है, किन्तु भगवान श्रीकृष्ण, संतजन एवं माता-पिता के आशीर्वाद से इस विषय को मैं भी स्पर्श करने का प्रयास कर रहा हूँ। श्रीमद्भगवद्गीता के 700 श्लोकों में से कुछ विशिष्ट श्लोकों पर एक शृंखला के रूप में हम चर्चा करेंगे.....

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः (फ्) पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय॥1.1॥

भावार्थः हे संजय! धर्म भूमि कुरूक्षेत्र में युद्ध की इच्छा से एकत्र मेरे और पाण्डु के पुत्रों ने क्या किया?

व्याख्याः यह श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय 'अर्जुन विषाद योग (संशय विषाद योग या कुरुक्षेत्र के युद्धक्षेत्र में सैन्य निरीक्षण)' का प्रथम श्लोक है। महाभारत में कुल 18 पर्व में से 'भीष्म पर्व' के अन्तर्गत श्रीमद्भगवद्गीता पर्व एक 'अवांतर पर्व' है, जो 'भीष्म पर्व' के 25 वें अध्याय से आरम्भ होकर 42 वें अध्याय तक है और यह अनुष्टुप (32 वर्ण) एवं त्रिष्टुप छंद (44 वर्ण) में लिखी हुई है। हस्तिनापुर के राजा धृतराष्ट्र के प्रश्न से श्रीमद्भगवद्गीता का आरम्भ होता है, किन्तु पूरी गीता में उनके द्वारा यह एकमात्र ही श्लोक ही बोला गया है, जिसका कारण था–राजा का पक्षपातपूर्ण व्यवहार। जब धृतराष्ट्र ने प्रथम श्लोक में ही अपने और पाण्डु के पुत्रों के साथ भेदभाव किया, तो उन्हें आगे किसी भी श्लोक को बोलने का अवसर ही नहीं मिला, क्योंकि गीता स्वार्थ और भेदभाव का संदेश न देकर परमार्थ और सनातन समानता के विषय पर केन्द्रित है।

धृतराष्ट्र का अंधापन इस बात का भी प्रतीक है कि आँखो से कामना नहीं उठती, कामना और वासना मन से उठती है। एक अंधे मनुष्य की जिज्ञासा से गीता की अद्भुत कथा का आरंभ होता है, क्योंकि जगत् और जीवन की सारी कथाएं भीतरी आँख न होने के कारण आरंभ होती है। धृतराष्ट्र अंधे हैं फिर भी मीलों दूर हो रहे युद्ध को जानने के लिए उत्सुक, पीड़ित और आतुर हैं। यहाँ एक बात और महत्वपूर्ण है कि अंधे धृतराष्ट्र के सौ पुत्रों के आँखे होने के बाद भी भीतरी आँख नहीं होने के कारण अंधा व्यवहार कर रहें हैं। योग हमेशा चीख–चीखकर कहता है कि वास्तविक आँखें वह हैं जो मन पर नियंत्रण कर ले जिसे भगवान श्रीकृष्ण ने गीता ग्रंथ के माध्यम से

समझाने का प्रयास किया है। आज बहुत से लोग पुराने ग्रंथों को माइथोलॉजी व कपोल कल्पना भी अज्ञानवश कह देते हैं, क्योंकि उनके पास संजय और व्यास जी की तरह दूरदृष्टि (मन की दृष्टि) नहीं हैं। पता नहीं क्यों कुछ सनातनी लोग दुर्भाग्य के कारण हमारे सत्य सनातन ग्रंथों को ऐसा कहते हैं।

मनुष्य का मन जब हीनता की ग्रंथि से पीड़ित होता है, तब वह अपने को भीतर से हीन समझता है और अपनी ही श्रेष्ठता की चर्चा करता है। इसीलिए श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण किसी को हीन नहीं समझते और दूसरे की श्रेष्ठता से चर्चा शुरू होती है। इस तरह सरल शब्दों में 'दूसरे के लिए अच्छा सोचना ही योग' है। इसीलिए गीता में 'विषाद भी प्रसाद या योग' बन जाता है। गीता का आरंभ धर्म पद के 'धर्' से आरम्भ होता है और अन्तिम श्लोक 'मम' पद के 'म' से समाप्त होता है। इस तरह सम्पूर्ण गीता 'धर्म' के अन्तर्गत है अर्थात् धर्म का पालन करने से गीता के सिद्धान्तों का तथा गीता के सिद्धान्तों (कर्त्तव्य कर्म) का पालन करने से धर्म का अनुष्ठान हो जाता है।

कुरुक्षेत्र को धर्मक्षेत्र इसलिए कहा गया, क्योंकि यहाँ देवताओं ने यज्ञ तथा राजा कुरू ने तपस्या की थी। इसलिए यह भूमि 'धर्मक्षेत्र या तीर्थ भूमि' है क्योंकि यहाँ सबका कल्याण होगा। स्वामी रामसुख दास जी कहते हैं कि "जैसे दही बिलोते हैं तो उसमें हलचल पैदा होती है, जिससे मक्खन निकलता है, ऐसे ही 'मामकाः' और 'पाण्डवाः' के भेद से हुई हलचल से अर्जुन के मन में कल्याण की अभिलाषा जाग्रत हुई, जिससे भगवद्गीता रूपी मक्खन निकला। तात्पर्य यह हुआ कि धृतराष्ट्र के मन में होने वाली हलचल से लड़ाई पैदा हुई और अर्जुन के मन में होने वाली हलचल से गीता प्रकट हुई।"

सेनायोरुभयोर्मध्ये रथं(म्)स्थापय मेऽच्युत॥1.21॥
यावदेतान्निरीक्षेऽहं(म्) योद्धुकामानवस्थितान्।
कैर्मया सह योद्धव्यम् अस्मिन्रणसमुद्यमे॥1.22॥

अर्जुन उवाच (अर्जुन बोले)

हे अर्जुन! आप दोनों सेनाओं के मध्य मेरे रथ को तब तक खड़ा करें, जब तक मैं युद्ध क्षेत्र में खड़े हुए इन युद्ध के लिए व्याकुल दुष्ट बुद्धि कौरवों को देख न लूँ कि इस युद्ध रूपी परीक्षा में मुझे किस-किस के साथ युद्ध करना है।

यहाँ एक बात का संकेत है कि जब व्यक्ति स्वयं युद्ध के लिए तत्पर होता है, तो उसे यह चिंता नहीं होती कि मेरे सामने युद्ध करने वाला कौन है? इसलिए अर्जुन के लिए यह युद्ध भीतर से आई हुई पुकार या कर्त्तव्य पालन न होकर विवशता लग रही है। जब भीतर युद्ध नहीं होता तो व्यक्ति जाँच-पड़ताल करता है। वहीं सामान्य अर्थ यह लग रहा है कि जिससे लड़ना है, उसे ठीक से पहचाना ही युद्ध का पहला नियम है।

गीता का महान उपदेश श्रीकृष्ण के मुख से निकलने वाला है। इसलिए युद्ध में खड़ा अर्जुन थोड़ी देर में डांवाडोल या कम्पित होने वाला है। ये श्लोक यह भी बताता है कि परमात्मा सभी परिस्थितियों में एक जैसे रहते

हैं और मनुष्य ऐसा नहीं करता। वास्तविक योग अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थिति में समान रहना है अर्थात् प्रत्येक परिस्थिति का सदुपयोग करना ही निष्काम कर्म योग है, यह संत की परिभाषा भी है।

श्रीमद्भगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण अर्जुन या अन्य कोई भी उद्बोधन एक विशेष भाव व्यक्त करता है। यहाँ अच्युत भगवान श्रीकृष्ण को कहा गया है, जिसका अर्थ है जो शाश्वत, अटल और स्थिर है। इसका अर्थ है कि भगवान श्रीकृष्ण तो जगद्गुरु, अन्तर्यामी और अच्युत हैं, जो अर्जुन के अन्दर के अन्तर्द्वन्द, पलायनवाद और ज्वालामुखी को बाहर निकालकर कर्त्तव्य को अच्युत करेंगे।

एवमुक्त्वार्जुनः(स्) सङ्ख्ये, रथोपस्थ उपाविशत्।
विसृज्य सशरं(ञ) चापं, शोकसंविग्नमानसः ॥1.47॥

संजय बोले (संजय ने कहा): ऐसा कहकर दुःखी मन वाले अर्जुन बाण सहित धनुष का त्याग करके युद्ध भूमि में रथ के मध्य भाग में बैठ गये।

अर्जुन का अर्थ होता है: उज्ज्वल, शुद्ध और निर्मल मन वाला। अर्जुन श्रीकृष्ण के भाई और सखा होने के कारण निर्मल मन से सब कुछ भगवान श्रीकृष्ण के सामने कह देते हैं। अर्जुन कहते हैं कि युद्ध अनर्थों की जड़ है, क्योंकि इससे संसार का विनाश और परलोक में नरक की प्राप्ति होती है। इस तरह अर्जुन कर्त्तव्यच्युत हो जाते हैं और अर्जुन के भीतर का 'मोह' जाग्रत होकर विषाद में गाण्डीव (अर्जुन को अग्निदेव द्वारा दिया गया धनुष) धनुष का त्याग भी करवा देता है। यही मोह की महिमा है। इसलिए भगवान ने आगे मनुष्य मात्र को कर्त्तव्य ज्ञान कराकर यह उपदेश दिया कि होनी को रोकना मनुष्य के हाथ में नहीं है, किन्तु गुरु, शास्त्र और भगवान द्वारा दिये गये कर्त्तव्य के पालन से मनुष्य अपना उद्धार कर सकता है, किन्तु यहाँ अर्जुन, जैसे राहू के कारण सूर्य में ग्रहण लग जाता है और वह कलाहीन हो जाता है या लोभ में पड़ने पर तपस्वी भ्रमित हो जाता है, उसी तरह धनुर्धर अर्जुन भी कर्त्तव्यच्युत होने के कारण अत्यंत व्याकुल, उदासीन और नितांत दुःखी हो गये हैं, जिनकी आँखों से निरंतर अश्रुधारा निकल रही है। इस तरह श्रीमद्भगवद्गीता के प्रथम अध्याय का यह अन्तिम 47वां श्लोक अर्जुन के अन्तर्मन के द्वन्द के चरमोत्कर्ष को प्रकट करता है।

★★★

सनातन धर्म की मूलाधार : गौ माता

लालू जी (गौ सेवक)

गौ माता सनातन धर्म की मूलाधार है। गौ माता हमारे प्रभु भगवान श्री राम और भगवान श्रीकृष्ण और ऋषियों मुनियों की पूजनीय और वंदनीय है। गौ माता में 33 कोटि देवी देवताओं का वास है। गौ माता का दूध अमृत तुल्य है। गौ माता के दूध व जननी माता के दूध में एक ही तत्व पाया जाता है। गौ माता धर्म अर्थ काम और मोक्ष सब कुछ देने वाली है। कन्यादान से पहले गौ माता का दान किया जाता है।

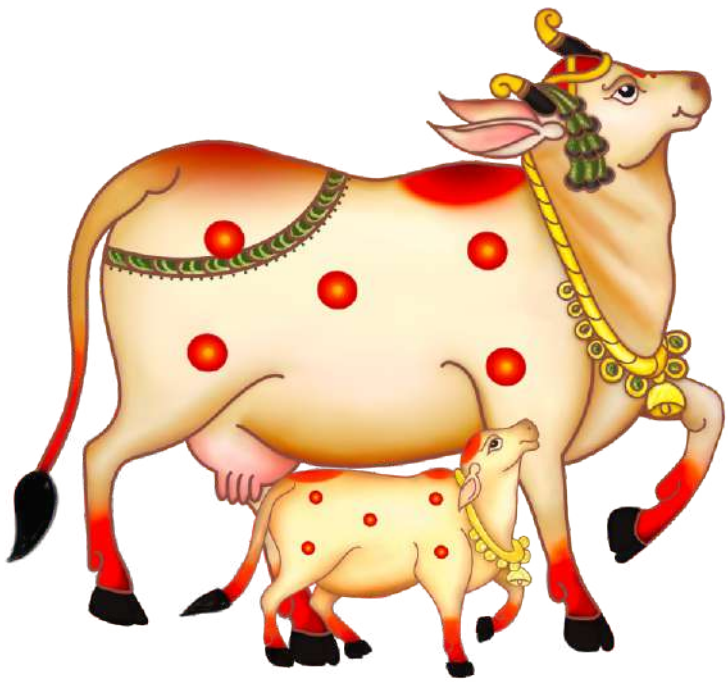

गोत्र का संबंध भी गाय माता से है : हम आज भी जब कोई भी धार्मिक अनुष्ठान करवाते हैं तो सबसे पहले ब्राह्मण देवता पूछते हैं कि आपका गोत्र क्या है?

गोत्र का अर्थ होता है गौ माता की रक्षा करना। कोई भी यजमान जब अपना गोत्र बताता है तो वह ऋषि के नाम पर होता है। संकल्प करते समय वह प्रमाण देता है कि हम उस ऋषि के वंशज हैं जो गौ माता की रक्षा और सेवा करते थे तब हम वह धार्मिक अनुष्ठान करने के अधिकारी होते हैं।

अष्टमी तिथि का संबंध भी गौ माता से है : हम प्रत्येक वर्ष गोपाष्टमी धूमधाम से मनाते हैं क्योंकि इस पावन दिन भगवान श्रीकृष्ण ने गायों को चराना शुरू किया था। इसके अलावा दुर्गा अष्टमी का संबंध भी गौ माता से है। नौ देवियों में आठवीं देवी महागौरी है जिसकी सवारी गौ माता है। इस दिन कन्या भोज कराया जाता है। गौ माता और कन्या दोनो एक रूप हैं। इसी प्रकार श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, राधाष्टमी, लक्ष्मी अष्टमी का संबंध भी गौ माता से है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार देवताओं और असुरों के बीच हुए समुंद्र मंथन से निकले 14 रत्नों में से एक कामधेनु गाय थी। प्राचीन काल से ही भारत में गौ धन को मुख्य धन मानते आए हैं और हर प्रकार से गौ रक्षा और गौ पालन पर जोर दिया जाता रहा है। गौ माता भगवान श्रीकृष्ण को सबसे अधिक प्रिय है। गौ माता पृथ्वी का प्रतीक है। सभी वेद भी गौ माता से प्रतिष्ठित हैं।

स्कंद पुराण के अनुसार गौ सर्वदेवमयी और वेद सर्वगौमय है। भगवान श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद गीता में कहा है– मैं गायों में कामधेनु हूं। ईसाई धर्म के प्रवर्तक प्रभु ईसा मसीह ने कहा था कि एक गाय को मारना एक मनुष्य को मारने के समान है। गुरु गोविंद सिंह जी ने कहा था यही देहु आज्ञा तुरुक को खपाऊ गौ माता का दुख सदा मैं मिटाऊ। बाल गंगाधर तिलक ने कहा था कि चाहे मुझे मार डालो पर गाय पर हाथ न उठाओ।

प्रसिद्ध मुस्लिम संत रसखान की इच्छा थी कि यदि पशु के रूप में मेरा जन्म हो तो मैं नंद बाबा की गायों के बीच में जन्म लूं। पंडित मदन मोहन मालवीय का कथन था कि यदि हम गाय की रक्षा करेंगे तो गाय हमारी रक्षा करेगी। महात्मा नामदेव जी ने दिल्ली के बादशाह के कहने पर भगवान श्रीकृष्ण की कृपा से मृत गाय को जीवन दान दिया। इस प्रकार से देवो, वेदों, महापुरुषों और आमजनों में गौ माता का महत्व सदा से रहा है।

गौ माता को राज्य माता का दर्जा मिलना चाहिए : उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री माननीय आदित्य नाथ योगी जी गौ माता की रक्षा और संवर्धन हेतु सराहनीय कार्य कर रहे हैं। उन्होंने व्यापक स्तर पर गौ माताओं के लिए चारे के साथ साथ गौ माताओं की रक्षा और संवर्धन हेतु महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। उत्तर प्रदेश की कई सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं के साथ साथ श्री धाम अयोध्या और श्री धाम वृंदावन के साधु संत चाहते हैं कि गौ माता को पशु मंत्रालय से हटाया जाए और उनके लिए एक अलग मंत्रालय बनाया जाए। साथ ही साथ भारत वर्ष के सबसे बड़े राज्य उत्तर प्रदेश में गौ माता को राज्य माता का दर्जा दिया जाय।

उत्तर प्रदेश के पशुधन मंत्री धर्म पाल सिंह ने शुक्रवार 19 मई को बरेली में घोषणा की थी कि उत्तर प्रदेश के प्रमुख चौराहे कामधेनु चौराहे के नाम से जाने जायें। इसके पीछे वजह यह है कि गौ माता को और अधिक सम्मान दिया जा सके क्योंकि सनातन धर्म में गाय को गौ माता के रूप में पूजा जाता है। पशुधन मंत्री ने कहा कि कामधेनु के नाम से प्रमुख चौराहों के नाम रखने के पीछे मंशा यह भी है कि गायों को अच्छी तरह से संरक्षित किया जा सके। उन्होंने एक समाचार पत्र से बातचीत में बताया कि गाय हमारी माता है। हमारी संस्कृति भी इसी पर निर्भर है। गौ माता का दूध अमृत के समान है। इन सभी बातों को समझते हुए गौ माता का सम्मान बढ़ाने की दिशा में योगी सरकार अनेक काम कर रही है। धर्म पाल सिंह के इस बयान से गौ भक्तों के साथ साधु संतो में खुशी की लहर है। उन्हें अब पूरी आशा है कि उत्तर प्रदेश में गौ माता को राज्य माता का दर्जा भी जल्द मिल जायेगा।

★★★

ब्रह्मांचल पर्वत पर राधारानी के दर्शन के लिए अब रोप-वे

-चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

- बरसाना में ब्रह्माचंल पर्वत पर 216 मीटर लंबा रोप-वे तैयार हो रहा।
- वर्ष 2024 के शुरूआत में रोप-वे शुरू होने का दावा, छः ट्राली भक्तों को मंदिर तक ले जायेंगी।

बरसाना में दर्शन करने के लिए लाड़िली जी के मंदिर तक ब्रह्मांचल पर्वत की सीढ़ियों पर चढ़ना और उतरना जल्द ही बहुत आसान होने जा रहा है।

दिल्ली और एनसीआर के आसपास क्षेत्र का पहला रोप-वे (उड़न खटोला) अब मथुरा के कस्बा बरसाना में तैयार होने जा रहा है। इस रोप-वे से 210 मीटर का सफर तय करते हुए श्रद्धालु राधारानी के दर्शन के लिए अब आराम से पहुंच सकेंगे। यह परियोजना दिसंबर 2023 में पूरी होने की संभावना है। अगले वर्ष 2024 के शुरुआत में राधारानी के दर्शन करने के लिए भक्तजन इस रोप-वे का सफर तय कर सकेंगे।

आठ साल पहले प्रदेश सरकार ने बरसाना में रोप-वे की स्वीकृति दी थी। इसके क्रियान्वयन की जिम्मेदारी मथुरा-वृंदावन विकास प्राधिकरण को मिली थी। ट्रिपल पी मॉडल पर इस योजना को अमली जाना पहनाने में एनजीटी की शर्तें पूरी करने में देर हुई। कभी पहाड़ी पर पेड़-पौधे काटने में बाधा आयी तो कभी जमीन अधिग्रहण की समस्या सामने आई। देरी की ये वजह रहीं।

अभी तक 350 सीढ़ी चढ़कर दर्शन होते हैं
70 फीसदी काम पूर्ण

बरसाना में रोप वे पीपीपी मॉडल पर बनाया जा रहा है। इस रोप-वे को दिल्ली की एक कंपनी बना रही है, जो राधा रानी रोप वे के नाम से काम कर रही है। इसको तैयार करने में 30 करोड़ रुपए खर्च किए जा रहे हैं। इसका 70 प्रतिशत काम पूरा कर लिया गया है।

यहां रोप वे जिस जगह से चलेगा वहां ऑफिस, ऑपरेटिंग रूम, वेटिंग रूम तैयार कर दिए गए हैं। इसके साथ ही मंदिर तक 6 टावर भी लग कर तैयार हैं। टावर के बेस और टॉप लगा दिए हैं, जिन पहियों पर रोप वे चलेगा वह भी लगा दिए गए हैं।

रोप-वे के संचालन के लिए अब वायर और उस पर चलने वाली ट्रॉली लगना बाकी है। यह सामान चीन से आएगा लेकिन किसी कारण से वहां से सामान की आपूर्ति नहीं हो पा रही है।

राधा रानी का मंदिर तक ब्रह्मांचल पर्वत पर श्रद्धालुओं को 350 सीढ़ी चढ़कर जाना होता है। ज्यादा सीढ़ियां होने की वजह से बहुत से श्रद्धालु ऐसे होते हैं जो दर्शन करने से रह जाते हैं। हालांकि यहां श्रद्धालुओं को दर्शनों के लिए ले जाने के लिए पालकी भी मिलती है। दो लोगों द्वारा उठाई जाने वाली इस पालकी में एक ही व्यक्ति सफर कर सकता है, जिसका भाड़ा भी ज्यादा होता है। श्रद्धालुओं को 350 सीढ़ी चढकर जाना पड़ता है।

बरसाना में बनने वाला यह उत्तर प्रदेश का तीसरा रोप वे है। इससे पहले चित्रकूट और विंध्याचल धाम में रोप वे लगाए गए थे।

राधा रानी के दर्शनों के लिए आम दिनों में 20 से 25 हजार श्रद्धालु पहुंचते हैं। यह संख्या छुट्टी वाले दिनों में लाखों में पहुंच जाती है।

बरसाना में रोप-वे बना रही कंपनी औपचारिकताओं के पूर्ण होने तक यहां से विध्यांचल चली गयी, जहां रोप-वे तैयार करने में जुट गई। वहां के प्रोजेक्ट को पूरा करने के बाद अब कंपनी ने एक बार फिर बरसाना में काम तेज कर दिया है।

कंपनी जमीन पर रोप-वे का स्टेशन तैयार कर चुकी है। यहां अब आठ पिलर की फुटिंग की जा रही है। दिसंबर 2023 ने प्रोजेक्ट पूरा करने का दावा किया जा रहा है। मथुरा-वृंदावन विकास प्राधिकरण के अधिशासी अभियंता कौशलेंद्र चौधरी ने बताया कि बरसाना में रोप-वे का काम तेजी के साथ चल रहा है। दिसंबर में यह प्रोजेक्ट पूरा कर लिया जाएगा। बरसाना रोप-वे के तहत 210 मीटर लंबा मार्ग तैयार होगा। इसमें छह ट्राली संचालित होंगी।

रोप-वे की ऊंचाई 48 मीटर निर्धारित की गई है। राधारानी मंदिर के समीप ही इसका स्टेशन बनाया गया है। इन दिनों प्रोजेक्ट के काम की निरंतर निगरानी की जा रही है, जिससे कार्य में किसी प्रकार का अवरोध पैदा न हो।

बरसाना में रोप-वे शुरू होने के बाद समूचे ब्रज में पर्यटन विकास की संभावनाओं को पंख लग जाएंगे। वर्तमान में बरसाना यहां की लठामार होली और राधाष्टमी के आयोजन के लिए ही पर्यटकों को लुभाता है लेकिन रोप-वे बनने के बाद यहां पर्यटकों का आगमन निरंतर बढ़ने की संभावना रहेगी।

पिछले कुछ सालों से वृंदावन में बिहारी जी के दर्शन को सर्वाधिक लोग पहुंचते हैं। इसके बाद गोवर्धन में भक्तों की भीड़ पहुंचती है। अब बरसाना में रोप-वे तैयार होने के बाद गोवर्धन व नंदगांव की भीड़ यहां नजर आ सकती है। यह प्रोजेक्ट दिल्ली राष्ट्रीय क्षेत्र से जुड़े एरिया का एक मात्र रोप-वे होगा।

पुराणों में यह उल्लेख है कि ब्रह्मा जी पर्वत बन कर बरसाना में राधा कृष्ण का रास देखने के लिए आए थे। जिस पर्वत पर लाड़िली जी (राधे जू) का मंदिर है, उसे ब्रह्मांचल पर्वत कहा जाता है। इसी पहाड़ पर आगे राजस्थान के देवस्थान विभाग का कुशल बिहारी जी मंदिर है। इसे जयपुर के महाराज ने 1813 में बनवाया था। इस मंदिर से आगे संत रमेश बाबा का आश्रम माताजी गौशाला व मान मंदिर है।

मथुरा-वृंदावन विकास प्राधिकरण के अधिशासी अभियंता कौशलेंद्र चौधरी ने बताया कि बरसाना रोप-वे 216 मीटर लंबा है। इसकी ऊंचाई 33 मीटर है। यहां छह ट्रॉली का संचालन होगा। प्रत्येक ट्रॉली में छह लोगों को बैठने की सुविधा मिलेगी। संबंधित कंपनी के साथ प्राधिकरण ने 25 साल तक रोप-वे के संचालन का अनुबंध किया है। इसमें अपर स्टेशन मंदिर के निकट और लोअर स्टेशन बरसाना में निमार्णाधीन है।

ब्रह्माचल पर्वत की ऊंचाई काफी होने के कारण बुजुर्ग नहीं चल पाते हैं। स्थानीय और श्रद्धालुओं को काफी सहूलियत मंदिर से आने जाने में मिलेगी। इसके तैयार होने का सभी को इंतजार है।

★★★

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने टेर कदम्ब को बनाया रमणीक

-चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

- टेर कदंब में रूप गोस्वामी और सनातन गोस्वामी ने की थी साधना।
- तीर्थ यात्रियों के लिये स्थल बना आकर्षक

नंदगांव के समीप टेर कदम्ब ब्रज का एक रमणीक और मनभावन स्थल है। यहां कुंड के आसपास श्रीकृष्ण के प्रिय कदम्ब के वृक्ष हैं। यहां बंगाल से आये संत रूप गोस्वामी जी ने साधना की थी। इस स्थल पर खीर के भोग लगाने की परंपरा रही है।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद, मथुरा ने वर्ष 2021-22 में यहां घने वृक्षों के लिए 17.25 लाख की लागत से नये सिरे से कदम्ब के पौधों का रोपण कराया है। 93.33 लाख से समूचे परिसर की बाउंड्रीवाल व जन सुविधाएं उपलब्ध करायीं हैं। अब ये स्थल तीर्थ यात्रियों को आकर्षित कर रहा है। नंदगांव पहुंचने वाले तीर्थ यात्री टेर कदम्ब अवश्य देखने जा रहे हैं।

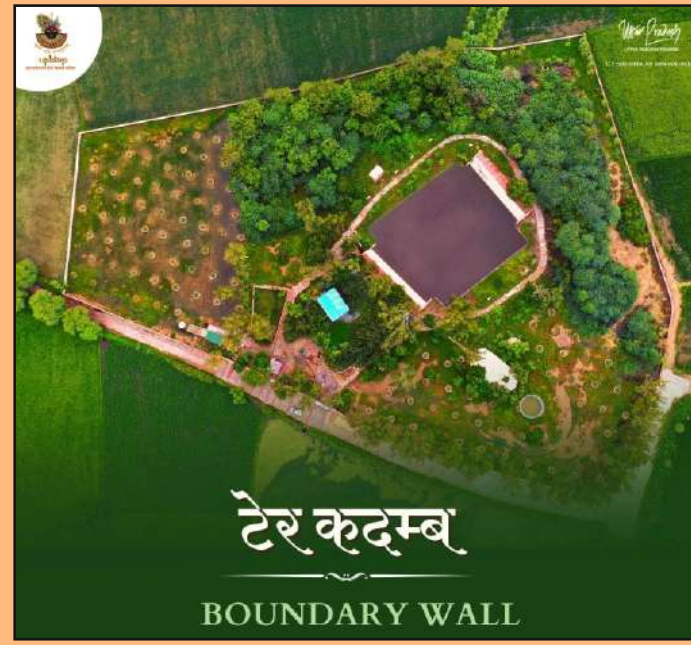

नंदगांव के आसपास कदंबखंडी में कदंब वृक्षों के घने जंगल हुआ करते थे, लेकिन अब कदंब के कम वृक्ष रह गए हैं। टेर शब्द का अर्थ है आवाज लगाना। कृष्ण कदंब वृक्षों में से एक वृक्ष की शाखा पर बैठ जाते थे।

दिन के दौरान गोचरण लीला या गाय के पालन के रोमांच का आनंद लेने के बाद, कृष्ण शाम को अपनी गायों के साथ लौटते थे। वे एक कदंब के पेड़ पर चढ़ते और एक पेड़ की शाखा पर बैठकर वह सभी गायों को बुलाते थे। उनकी बांसुरी पर सभी गायें इकट्ठी हो जातीं, तो कृष्ण उन्हें अपनी गिनती के मोतियों (गो-माला) पर गिनते और फिर पानी पीने के लिए पावना- सरोवर में ले जाते। वहाँ से गायों को लेकर वह गौशाला लौट जाते। एक अन्य अवसर पर उसी कदंब वृक्ष पर बैठकर कृष्ण ने अपनी बांसुरी बजाई और सभी गोपियों को रास-लीला के प्रसंगों का आनंद लेने के लिए टेर कदंब में इकट्ठा होने के लिए बुलाया था।

यहाँ एक कुंड है जिसे टेर कदंब-कुंड के नाम से जाना जाता है, जहाँ पर कृष्ण और गोपियों द्वारा रासलीला की जाती थी। यहाँ एक मंच भी स्थापित किया गया जो टेर कदंबा में रासलीला के श्लोकों का स्मरण कराता है। श्री चैतन्य महाप्रभु के निर्देश पर श्री रूप गोस्वामी बंगाल से ब्रज आए और यहां उनके भजन शुरू हुए।

एक दिन श्री रूप गोस्वामी दूसरे संत सनातन गोस्वामी के लिए कुछ मीठे चावल बनाना चाहते थे लेकिन उनकी कुटीर में मीठे चावल बनाने के लिए आवश्यक सामग्री नहीं थी। श्री प्यारी जू जो भक्तों की आंतरिक आकांक्षा की पूर्ति के बारे में जानती थी एवं समझती थी इसलिए एक युवा गोपी ने लड़की की पोशाक में रूप गोस्वामी को दूध, चावल और चीनी लाकर दी और कहा स्वामीजी! स्वामीजी! मैं आपके लिए कच्चे चावल लायी हूँ। कृपया इसे स्वीकार करें। युवा लड़की के शब्दों को सुनकर श्रीरूप गोस्वामी ने अपनी झोपड़ी का दरवाजा खोला और उन्होंने एक खूबसूरत युवा गोपी को भोजन के कुछ प्रसाद के साथ देखा। दूध, चीनी और कच्चे चावल की सामग्री को स्वीकार करते हुए जब रूप गोस्वामी घूमे तो देखा कि वहां लड़की चली गई। वह इस सब से बहुत परेशान थे। कुछ समय बाद उन्होंने प्रसाद को सनातन गोस्वामी को दिया, जो अभी पहुंचे थे। प्रसाद को पाकर सनातन गोस्वामी ने एक दिव्य रस एवं आनंद को महसूस किया। उन्होंने श्री रूप से पूछा, "आपको यह दूध और चावल कहाँ से मिला है?" रूप गोस्वामी ने कहा, "एक युवा गोपी लड़की आई और मुझे दे गयी।" सनातन ने कहा, "एक लड़की अचानक आई और आपको यह दूध और चावल दिया?" रूप गोस्वामी ने जवाब दिया, हाँ, वह अचानक आ गई। अजीब बात यह है कि मैं बस सोच रहा था, "मैं सनातन के लिए कुछ मीठा चावल कैसे बनाऊ और वह इस तरह दूध और चावल और कुछ चीनी के साथ जादुई रूप में दिखाई दी। यह सुनकर सनातन गोस्वामी की आंखों से प्रेम के आँसू गिरने लगे।

उन्होंने कहा, "क्या आप अपनी आंखों से पहचान नहीं सके? यह श्री राधा ठाकुरानी स्वयं थी जिन्होंने आपको दूध और चावल दिया है। उससे सेवा स्वीकार करके हमारा अपराध हो गया। अब हम अपने लक्ष्य को कभी हांसिल नहीं कर सकेंगे अर्थात उनकी सेवा हमको करनी है जो हमारा लक्ष्य है न की उनसे सेवा करवानी है। इस तरह, सनातन गोस्वामी और रूप गोस्वामी ने अत्यधिक नम्रता एवं दीनता से श्री राधारानी से सेवा स्वीकारने की भूल के कारण स्वयं की निंदा की। उसी दिन से आज तक टेर कदम्ब में खीर रूप से प्रसाद मिलता है। रूप गोस्वामी श्री राधा कृष्ण के वियोग में इतना अधिक तड़पे कि एक दिन उनकी सांस किसी व्यक्ति को छू गयी, तो उस व्यक्ति के शरीर पर छाले हो गए। यह घटना भक्ति रत्नाकर ग्रंथ में भी आयी है।

यहां रूप गोस्वामी की साधना स्थली है। श्रीकृष्ण की बांसुरी की धुन और उनके द्वारा टेर लगाकर गायों को बुलाने के स्थल के रूप में यह स्थली प्रसिद्ध है। उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद ने इसे और रमणीक बनाया है।

★★★

रासलीला की प्रस्तुति देख मुग्ध हुईं सांसद हेमा मालिनी जी

-चन्द्र प्रताप सिंह सिकरवार

- प्रो पुअर टूरिज्य प्रोजेक्ट में पोशाक व कंठीमाला बनाने वाली शिल्पी महिलाओं को किट वितरित कीं।
- सांसद ने कत्थक प्रवक्ता डॉ. मीरा को किया सम्मानित

गीता शोध संस्थान एवं रासलीला अकादमी, वृंदावन के सभागार में प्रो पुअर टूरिज्म डेवलपमेंट प्रोजेक्ट के अंतर्गत सांसद हेमा मालिनी, उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद, मथुरा के मुख्य कार्यपालक अधिकारी नगेंद्र प्रताप जी एवं प्रोजेक्ट से जुड़े अन्य अधिकारियों ने स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लाभार्थी महिलाओं को किट वितरित की। इस मौके पर बालक-बालिकाओं ने सांसद के समक्ष रासलीला की प्रस्तुति दी।

सांसद के हाथों से उन महिलाओं को सिलाई की मशीन, धागे, सूई आदि प्रदान की गई, जो ठाकुर जी की पोशाक बना कर स्वरोजगार से जुड़ी हैं। ये सभी दूसरी महिलाओं के लिए प्रेरक बन चुकी हैं। सांसद ने अन्य प्रकार की किट उन महिलाओं को दीं जो तुलसी की लकड़ी से कंठी माला बनाती हैं।

सांसद हेमा मालिनी प्रोजेक्ट के तहत मथुरा के ग्राम जैंत सुनरख एवं वृंदावन के विभिन्न मोहल्लों में कंठीमाला एवं पोशाक बनाने का कार्य करने वाली महिला शिल्पियों से मिलीं। उन्हें बधाई दी और प्रोत्साहित किया।

इस मौके पर रासाचार्य स्वामी घनश्याम शर्मा एवं भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय लखनऊ की कत्थक की प्रवक्ता डॉ. मीरा दीक्षित के निर्देशन में बालक-बालिकाओं ने रासलीला मंचन की छोटी सी प्रस्तुति दी। प्रस्तुति देख हेमा मालिनी अत्यंत खुश हुईं।

उ.प्र. ब्रज तीर्थ विकास परिषद के सीईओ श्री नगेंद्र प्रताप जी ने सांसद को रासलीला के प्रशिक्षण के बारे मे अवगत कराया। एक माह का ये प्रशिक्षण भातखंडे संस्कृति विश्वविद्यालय लखनऊ के सहयोग से दिया गया। डॉ. मीरा दीक्षित ने सांसद को अवगत कराया कि रासलीला प्रशिक्षण में कत्थक शैली में नृत्य भी सिखाया गया।

सांसद ने कत्थक की प्रवक्ता व नृत्यांगना डॉ. मीरा दीक्षित एवं रासाचार्य स्वामी घनश्याम शर्मा को प्रशस्ति पत्र प्रदान कर सम्मानित किया।

ब्रज संस्कृति विशेषज्ञ डा उमेश चंद्र शर्मा जी, जिला पर्यटन अधिकारी श्री डीके शर्मा जी एवं डॉ. जी एस पांडेय जी के अलावा लखनऊ से आए प्रोजेक्ट के अन्य अधिकारीगणों ने मंचन से पूर्व ठाकुर जी की आरती उतारी। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद के तकनीक अधिकारी श्री आर के जायसवाल, इंजीनियर श्री कोहली व श्री शाक्य, परिषद के सहायक अभियंता आरपी सिंह यादव आदि ने किट वितरित करायीं।

कृष्ण भक्ति काव्य में रसखान का स्थान

डॉ. सईद अहमद 'सईद'

हिन्दी साहित्य के कृष्ण भक्ति काव्य में भक्त कवि रसखान का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। शिव सिंह सरोज के लेखक शिव सिंह, 'प्रेम वाटिका' के सम्पादक पं. किशोरी लाल गोस्वामी 'रसखान और घनानन्द' के सम्पादक बाबू अमीर सिंह, मिश्रबंधु- विनोद के मिश्रवंधुओं, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, डॉ. रामकुमार वर्मा आदि के अतिरिक्त डॉ. असद भाजदा ने कृष्ण भक्त कवियों में रसखान के प्रमुख स्थान को स्पष्ट किया है। भारतेन्दु जी ने अपने भक्तमाल उत्तरार्द्ध में रसखान एवं अन्य मुस्लिम कवियों की भक्ति भावना से भाव-विभोर होकर कहा-

'इन मुसलमान हरिजनन पै, कोटि न हिन्दू बारिए।'

रसखान बल्लभ सम्प्रदाय के अनुयायी हैं। अत: इनकी भक्ति-पद्धति वैष्णव भक्ति है। वैष्णव भक्ति में नवधा भक्ति को पूर्ण महत्त्व दिया जाता है। इस भक्ति में मधुर भाव को जोड़कर इनके दस सोपान बना दिये गये हैं। रसखान के कृष्ण भक्त काव्य में यह दस सोपान पूर्ण रूप में नहीं मिलते क्योंकि रसखान किसी बंधी हुई पद्धति पर चलने वाले कवि नहीं हैं। यह प्रेमोन्मत्त भक्त कवि के रूप में अपना प्रमुख स्थान रखते हैं। रसखान के कृष्ण भक्ति काव्य में माधुर्य भक्ति ने ही उत्कृष्ट स्थान पाया है। कृष्ण के रूप वर्णन, विरह वर्णन और पूर्णतय: आत्म समर्पण ने रसखान को एक उच्च कोटि का कवि बना दिया है।

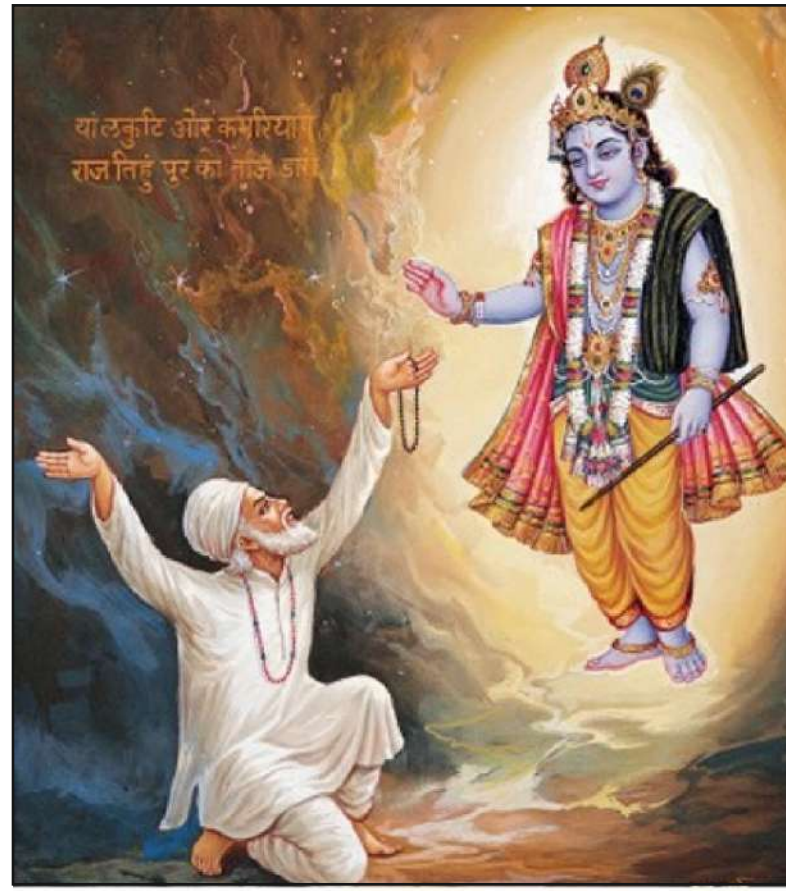

कृष्ण के प्रति अपनी भक्ति भावना व्यक्त करते हुये रसखान कहते हैं कि यदि मुझे आगामी जन्म में मनुष्य योनि मिले तो मैं वही मनुष्य बनूं जिसे गोकुल गांव के ग्वालों के साथ रहने का अवसर मिले। आगामी जन्म पर मेरा कोई बस नहीं है, ईश्वर जैसी योनि चाहेगा वह देगा, इसलिये यदि मुझे पशु योनि मिले तो मेरा जन्म ब्रज या गोकुल में ही हो, ताकि मुझे नित्यानन्द की गायों के मध्य में विचरण करने का सौभाग्य प्राप्त हो सके। यदि मुझे पत्थर योनि मिले तो मैं उसी पर्वत का बनूँ जिसे श्रीकृष्ण ने इन्द्र का गर्व नष्ट करने के लिये अपने हाथ पर छाते की भाँति उठा लिया था। यदि मुझे पक्षी योनि मिले तो मैं ब्रज मैं ही जन्म पाऊँ। ताकि मैं यमुना के तट पर खड़े हुये कदम्ब के वृक्ष की डालियों में निवास कर सकूँ। रसखान की कृष्ण भक्ति काव्य में यह स्वतन्त्र अभिव्यक्ति रसखान को भक्त कवियों में एक अनूठा स्थान दिलाती है।

कृष्ण भक्ति काव्य में रसखान का अलौकितत्व:– रसखान ने पूर्ण रूप में कृष्ण के अलौकिकत्व का वर्णन करके अपने काव्य को एक ऊँचा मकान दिया है। कवि रसखान के अनुसार जिस कृष्ण का जप शंकर जैसे देव करते हैं, जिसका ध्यान करके ब्रह्म अपने धर्म में वृद्धि करते हैं, जिसका तनिक सा स्मरण भी हृदय में लाकर अत्यन्त मूर्ख भी ज्ञान का भण्डार बन जाते हैं, जिस पर देव, किन्नर और पृथ्वी पर रहने वाली स्त्रियाँ अपने प्राणों को न्यौछावर करके सजीवता प्राप्त करती हैं, उसी कृष्ण को अहीर की लड़कियाँ थोड़ी सी छाछ के लिये नाच नचाती हैं। रसखान कहते हैं–

सेष, गनेस, महेश, दिनेस, सुरेसहु जाहि निरन्तर गावैं
जाहि अनाद अनन्त अखण्ड अछेद अभेद सु वेद बतावैं
नारद से सुक व्यास रटें पचि हारे तऊ पुनि पार न पावैं
ताहि अहीर की छोहरियाँ छछिया भरि छाछ पै नाच नचावैं

जिस कृष्ण के गुणों का गान अप्सरा, गंधर्व, शारदा शेषनाग सभी करते हैं, गणेश जिसके अनन्त नामों का स्मरण करते हैं, ब्रह्मा और शिव भी जिसके स्वरूप को नहीं जान सके, जिसे प्राप्त करने के लिये योगी, यति, तपस्वी और सिद्ध निरन्तर समाधि लगाये रहते हैं, फिर भी उनका भेद नहीं जान पाते, उसी कृष्ण को अहीर की लड़कियाँ थोड़ी सी छाछ के लिये नाच नचाती हैं।

कृष्ण भक्ति के कवियों ने कृष्ण को साकार मानकर कृष्ण के माधुर्य रूप का वर्णन किया है, परन्तु ये अपने काव्य में यथा अवसर कृष्ण के अलौकिकत्व का भी प्रदर्शन करते नजर आते हैं। रसखान ने भी इस प्रवृत्ति का पालन किया है। कृष्ण के अलौकिकत्व का प्रतिपादन करने वाले रसखान के अष्ट छन्द उपलब्ध हैं जिनमें कृष्ण के लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के रूपों का वर्णन मिलता है। वस्तुत: रसखान के कृष्ण हैं तो अलौकिक ही जिसे कवि ने भक्तिभाव एवं आनन्द की प्राप्ति के लिये निराकार को साकार बना कर प्रस्तुत किया है। शिव जिसको आराध्य मानकर ध्यान करते हैं, जिससे महान दूसरा कोई नहीं, सारा संसार जिसकी पूजा करता है। उसको साकार रूप में रसखान इस प्रकार स्पष्ट करते हैं–

कहा कहूँ आली कछु कहती बने न बात
नन्द जी के आंगन में कौतुक एक देख्यो मैं
जगत को ठाटी महापुरूष विराटी जो
निरंजन निराटी ताहि मांटी खात देख्यो मैं

कृष्ण भक्ति काव्य में रसखान की सर्वोत्कृष्ट प्रेम पद्धति :- रसखान की सर्वोत्कृष्ट प्रेम पद्धति ने रसखान को प्रेम के सर्वोच्च शिखर पर आसीन किया है। रसखान ने फारसी से ब्रजभाषा में प्रवेश किया। फारसी सूफियों की प्रेम पद्धति हुस्न-ए-बुता में भी हुस्न-ए-खुदा का दीदार करती है। प्रेम परमात्मा है। रसखान ने स्पष्ट कहा है कि राधा और कृष्ण ये दोनों ही प्रेम के आलम्बन हैं, प्रेम वाटिका के मालिन और माली हैं। रसखान ने अपनी महत्त्वपूर्ण कृति प्रेम वाटिका में प्रेम के सर्वश्रेष्ठ स्थान को उजागर किया है। इनके अनुसार सच्चा प्रेम अकारण ही होता है। इसमें किसी आकर्षण साधन की आवश्यकता नहीं होती है। प्रेम ही भगवान का स्वरूप है। जिस प्रकार भगवान के स्वरूप का वर्णन नहीं किया जा सकता, उसी प्रकार प्रेम भी अवर्णनीय है-

अकथ कहानी प्रेम की जानत लैली खूब
दो तनहु जहँ एक में मन मिलाइ महबूब
दो मन इक होते सुन्यौ पै वह प्रेम न आहि
होइ जवै द्वै तनहु इक सोई प्रेम कहाहि
जातें उपजत प्रेम सोइ बीन कहावत प्रेम
जामें उपजत प्रेम सोइ क्षेत्र कहावत प्रेम
जातें उपजत बढ़त अरू फूलत फलत महान
सो सब प्रेमहि प्रेम यह कहत रसिक रसखान
सास्त्रन पढ़ि पंडित भए के मौलवी कुरआन
जु पै प्रेम जान्यौ नहीं कहा कियौ रसखान

प्रेम की महत्ता का वर्णन करते हुये रसखान कहते हैं कि प्रेम ही परमात्मा का रूप है। उसी प्रकार परमात्मा भी प्रेम का स्वरूप हैं। एक होकर भी दोनो दो रूपों में इस प्रकार सुशोभित हैं जैसे सूरज और उसकी धूप प्रेम के उच्च स्थान उजागर करते हुये रसखान कहते हैं-

प्रेम अगम अनुपम अमित सागर सरिस बखान
जो आवत यहि डिंग बहुतिर जातनाहि रसखान
कमल तन्तु सो छीन अरू कटि खड़क की धार
अति सूधो टेढो बहुरि प्रेम-पंथ अनिवार्य

रसखान ने अपनी प्रेम पद्धति को जो सर्वोच्च एवं सर्वोत्कृष्ट स्थान दिया है, उसका मूल आधार भारतीय दर्शन है। भारतीय दर्शन में शुद्ध प्रेम का जो वैविध्य स्थान है, वही स्थान रसखान ने अपने काव्य में प्रस्तुत किया है।

रसखान काव्य में कृष्ण सर्वोपरि राधा सर्वोच्च शक्ति :- रसखान काव्य में अन्य कृष्ण भक्त कवियों की भांति कृष्ण स्थान सर्वोपरि और राधा को सर्वोच्च शक्ति के रूप में प्रस्तुत किया गया है। कवि ने इन दोनों के रूप का दिव्य वर्णन लौकिक रूप में करके अपने काव्य को उच्च भावना दी है। कृष्ण रसखान का सच्चा महबूब है। कृष्ण की तलाश में यह दर-दर भटकते हैं। इसके स्वरूप और स्वभाव की खोज करते हुये यह थक जाते हैं। जब किसी ने भी इसके महबूब का इसे पता नहीं बताया तो इनकी उच्च अनुभूति ने इन्हें यह दृश्य दिखाया-

ब्रह्म में ढूँढयौ पुरानन गायन वेद रिचा सुनि चौगुने चायन
देख्यौ सुन्यौ कबहु न किर्तु वह सरूपऔं कैसे सुभायन
टेरत हेरत हारि पर्यो रसखानि बतायौ न लोग लुगायन
देखौ दुरौ वह कुंज- कुटीर में बैठो पलोटत राधिका पायन

सर्व विदित रसखान मुसलमान होते हुये भी एक उच्च कोटि के कृष्ण भक्त कवि हैं। इनकी कृतियों को देखकर हमें सर्वत्र यही प्राप्त होता है कि इनका मूल ध्येय कृष्ण भक्ति है। इन्होंने कृष्ण भक्ति सम्बन्धी जो सरिता अपने काव्य में प्रवाहित की है, वह अपने स्थान पर अतुलनीय है। इनकी केवल भक्ति ही ने काव्य में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त नहीं किया अपितु भाव तथा कला ने भी सबल स्थान प्राप्त किया है। रसखान सवैया सम्राट के साथ-साथ अनुप्रास और यमक सम्राट भी हैं। इन जैसे भावुक कवि की भाषा में अलंकारों का प्रवाह इन्हें काव्य के उच्च शिखर पर आसीत करता है।

कृष्ण भक्ति काव्य में मुसलमान कवियों ने काव्य रचना करके अपनी भक्ति के काव्य सुमन अर्पित किये परन्तु रसखान के हृदय से जो काव्य धारा प्रवाहित हुई उसके सम्मुख कोई भी मुस्लिम कवि टिक नहीं सकता। वास्तव में रसखान का काव्य अलौकिक प्रेम और भक्ति भाव का वर्णन करने में अनूठा स्थान रखता है। यह भारत के कण-कण से गहन आत्मीयता रखते हैं। मुसलमान होने के उपरान्त भी एक आस्थावान विश्वासी हिन्दू की भांति कृष्ण के प्रति उनकी आस्था पूर्ण निष्ठा के साथ छलकती दिखाई देती है। उनके हृदय में भारतीय पौराणिक कथाओं का श्रद्धा सागर उमड़ता दिखाई देता है। मुसलमान होकर भी कृष्ण भक्ति काव्य में रसखान का श्रेष्ठ स्थान है।

★★★

संस्कृत भाषा से युवाओं में संस्कारों का बीजारोपण

श्रीमती राजकुमारी : सह आचार्य (संस्कृत)
महारानी जया राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, भरतपुर

संस्कृत भाषा का प्राथमिक अध्ययन करा कर युवाओं को रोजगार से जोड़ने का कार्य संस्कृत अकादमी, राजस्थान भली प्रकार से कर रही है। युवाओं को संस्कृत सिखाने के साथ-साथ उन्हें समग्र पुरोहित प्रशिक्षण दिया जा रहा है। अत: अनुष्ठान व कर्मकांड कराने का प्रशिक्षण लगातार आगे बढ़ रहा है।

राजस्थान की संस्कृत अकादमी ने प्रशिक्षण योजना लागू कर संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए एक अनुकरणीय कदम उठाया है। संस्कृत साहित्य के प्राथमिक अध्ययन व सीखे गए मंत्रों से परिवारों में सोलह संस्कार कराने, घर व मंदिरों में पूजा अर्चन कराने, पूजा सामग्री का निर्माण करने जैसे कार्यों के जरिए युवाओं के लिए रोजगार के रास्ते खोले हैं।

इस कार्य को संपन्न कराने के लिए राजस्थान सरकार के कौशल, रोजगार और उद्यमिता विभाग (डीएसईई) और राजस्थान संस्कृत अकादमी ने प्रशिक्षण संचालित करने हेतु समझौता किया था। उसी समझौते के अनुपालन में यह प्रशिक्षण चलाया जा रहा है।

राजस्थान की संस्कृत अकादमी के अनुसार- "गुजरात के बाद समग्र पुरोहित प्रशिक्षण प्रदान करने वाला राजस्थान देश का दूसरा राज्य बना है। इससे पहले राजस्थान में युवाओं को यज्ञ कराने का प्रशिक्षण दिया जा चुका था।"

मनुष्य के जन्म से मृत्यु तक के 16 संस्कार होते हैं। युवाओं को यही संस्कार सिखाए जा रहे हैं। समग्र पुरोहित प्रशिक्षण के अंतर्गत युवाओं को संस्कृत के मंत्र उच्चारण, भजन जप, पूजा-अर्चन सिखाया जा रहा है। इसमें आशीर्वाद देने के लिए भक्त का नाम व जन्म नक्षत्र के साथ परिवार की वंशावली आदि पाठ कराया जाता है। साथ ही पूजा सामग्री के निर्माण का प्रशिक्षण दिलाया जा रहा है। युवा पूजा पाठ के साथ साथ संस्कृत साहित्य का अध्ययन भी कर रहे हैं। एक अध्ययन के अनुसार भारत में लगभग सवा लाख से अधिक मंदिर हैं। हर मंदिर में एक पुजारी की जरूरत होती है। इसी के दृष्टिगत समग्र पुरोहित प्रशिक्षण कार्यक्रम शुरु कराया गया है।

इस प्रकार का प्रशिक्षण युवाओं को भूली हुई संस्कृत भाषा के करीब लाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। अभी भी सनातन संस्कृति में पूजा पाठ व कर्मकांड का महत्वपूर्ण स्थान है। न केवल भारत में बल्कि विदेश में भी पुजारी बन कर रोजगार के अवसर प्राप्त किए जा रहे हैं।

राजस्थान संस्कृत अकादमी का परिचय : संस्कृत दिवस के अवसर पर राजस्थान संस्कृत अकादमी की स्थापना वर्ष 1980 में राजस्थान सरकार द्वारा की गई थी। संस्कृत अकादमी की स्थापना के मूल उद्देश्यों में संस्कृत भाषा एवं उसके साहित्य का संरक्षण, विकास एवं प्रोत्साहन के लिए शोध संस्थान की स्थापना, संस्कृत वाड्मय में अन्तर्विष्ट ज्ञान का प्रकाशन एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद, उसका प्रचार-प्रसार, वैदिक परम्परागत उच्चारण एवं प्रक्रियाओं का संरक्षण इत्यादि कार्य सम्मिलित हैं।

संस्कृत अकादमी न केवल जयपुर व भरतपुर में बल्कि सम्पूर्ण प्रदेश में विभिन्न महत्त्वपूर्ण सामयिक विषयों पर विचार गोष्ठियाँ, कार्यशालाएं कराती है। विभिन्न महापुरुषों की जयंती मनायी जाती है। संस्कृत कवि सम्मेलन, रचना धर्मिता शिविर, ज्योतिष-पुरोहित साहित्य- संस्कृत सम्भाषण शिविर, मंत्रोच्चारण प्रतियोगिता, सिद्धान्त एवं प्रयोग आधारित कार्यशालाओं का आयोजन भी अकादमी कर रही है।

ग्रंथों का प्रकाशन : संस्कृत के वरिष्ठ विद्वानों के मार्गदर्शन एवं सान्निध्य में युगानुकूल शोध लेखन को प्रोत्साहन एवं उसका प्रकाशन भी अकादमी करती चली आ रही है। अकादमी अब तक 100 से अधिक ग्रन्थों का प्रकाशन कर चुकी है। संस्कृत लेखन को प्रोत्साहित करने हेतु लेखकों को उनके स्वरचित ग्रन्थों को प्रकाशित करवाने के लिए भी अकादमी आर्थिक सहायता प्रदान करती है। विपन्न संस्कृत विद्वानों को आर्थिक सहायता प्रदान की जाती है।

कर्मकांड व ज्योतिष की पढ़ाई ऑन लाइन

जयपुर के गोविन्द देव जी मंदिर प्रबंधन द्वारा श्री राधा गोविन्द प्रशिक्षण केंद्र से कर्मकांड व पांडित्य सिखाने का आन लाइन कोर्स प्रारंभ कराया गया है। इस कोर्स में ज्योतिष की भी ऑन लाइन कक्षाएं शुरू की गयीं।

यह एक वर्षीय यह डिप्लोमा कोर्स जगद्गुरु रामानन्दाचार्य राजस्थान संस्कृत विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त है। काफी समय तक डॉ. प्रशांत शर्मा घर से ही ऑनलाइन यूट्यूब के माध्यम से ज्योतिष कर्मकांड की शिक्षा दे रहे हैं। इस डिप्लोमा कोर्स में ज्योतिषीय गणना, फलित के साथ-साथ वेद पूजा पद्यति आदि का प्रशिक्षण दिया जाता है। डिप्लोमा के बाद विद्यार्थियों को आत्मबल मिलता है। हमारी संस्कृति का भी प्रचार होने के साथ आज वह अपनी आजीविका का साधन भी इसे बना रहे हैं।

पत्रिका प्रकाशन: अकादमी द्वारा त्रैमासिक पत्रिका 'स्वर मंगला' का प्रकाशन निरन्तर किया जा रहा है। यह पत्रिका शनैः शनैः अत्यन्त उत्कृष्ट शोध पत्रिका का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। इसमें बहुधा संस्कृत वाङ्य के गूढ विषयों पर गम्भीर चिन्तन से अध्येता लाभान्वित हो रहे हैं। संस्कृत में मौलिक लेखन को प्रोत्साहन

देने की दृष्टि से अकादमी प्रतिवर्ष अखिल भारतीय तथा राज्य स्तर के पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान करती है, जिनमें माघ पुरस्कार, पद्मश्री डॉ. मण्डन मिश्र पुरस्कार तथा पं. अम्बिकादत्त व्यास पुरस्कार प्रमुख हैं।

ग्रंथ अनुवाद व्यवस्था : अकादमी के प्रमुख उद्देश्यों में संस्कृत के महत्वपूर्ण ग्रन्थों को हिन्दी एवं अन्य भाषाओं में अनुवाद एवं उनके प्रकाशन की व्यवस्था, हिन्दी व अन्य भाषाओं के उत्कृष्ट ग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद व प्रकाशन भी है। देश की भावनात्मक एकता की दृष्टि से उपयुक्त संस्कृत साहित्य का प्रचार प्रसार करना है। वेदों के परम्परागत उच्चारण व वैदिक प्रक्रियाओं का संरक्षण, प्रशिक्षण, प्रकाशन एवं प्रचार करने के अलावा संस्कृत भाषा को जनसुलभ बनाने की दृष्टि से मानक ग्रन्थों तथा उनके अनुवादों के सस्ते और प्रमाणिक संस्करण उपलब्ध कराना भी उद्देश्य है।

सुदूर अंचलों में फैली हुई संस्कृत की हस्तलिखित कृतियों, पाण्डुलिपियों का सर्वेक्षण, क्रय, संग्रह एवं प्रकाशन भी एक उद्देश्य है। संस्कृत पत्र-पत्रिकायें प्रकाशित करना एवं प्रकाशित हो रही प्रदेश की संस्कृत पत्र-पत्रिकाओं को सहायता देना भी उसका कार्य है। संस्कृत लेखकों, साहित्यकारों एवं कवियों से उत्कृष्ट कृतियां लिखवाना तथा उनका सम्पादन करवाना, प्रकाशित कृतियों पर पुरस्कार देना भी अकादमी का उद्देश्य है।त्त

संस्कृत भाषा, साहित्य के रचनाकारों, वृद्ध एवं विपन्न विद्वानों को आर्थिक सहायता प्रदान करना भी अकादमी का एक दायित्व है। संस्कृत भाषा के उच्च अध्ययन के निमित्त निर्दिष्ट अवधि के लिए सुविधायें एवं आर्थिक सहायता प्रदान करना, संस्कृत नाटकों के मंचन को प्रोत्साहित करना, संस्कृत साहित्यकार कल्याण कोष की स्थापना तथा उसका उपयोग करना भी राजस्थान की संस्कृत अकादमी का असल उद्देश्य है।

★★★

ब्रज चौरासी कोस परिक्रमा

सुनील शर्मा

किसी एक निश्चित केन्द्र बिन्दु से घूमकर पुन: उसी स्थान पर लौटकर पहुँचने को परिक्रमा कहते है। यद्यपि पारमार्थिक सभी कार्य दाहिनी ओर से सम्पन्न होते है। पौराणिक आधार भक्ति के चौसठ अंगों में से परिक्रमा लगाना (परिब्रज्या) भी एक अंग है। शताब्दियों पूर्व जब मोटर गाड़ी वाहन आदि साधन भी नहीं था, तो लोगों का पैदल चलना मजबूरी हुआ करती थी। तब लगातार चलने से आजकल की तरह से इतनी बीमारियाँ नहीं होती थी। सारे तीर्थों की लोग पैदल ही यात्रा किया करते थे और इसमें विशेष रुचि भी रखते थे। पहले इसी आधार पर ही चौरासी कोस परिक्रमा का भी बड़ा महत्व था। अब तो परिक्रमा का अर्थ अर्थलोलुपता बन चुका है। वाराह पुराण के अनुसार प्रथम् विधान ब्रजयात्रा और वनयात्रा परिक्रमा के दो स्वरूप है। श्रद्धापूर्वक-स्नान, दान, भजन, पूजन, उपवास, व्रत, स्थल-विश्राम, परिक्रमा को वन यात्रा कहते है। यह भाद्र कृष्ण अष्टमी से भाद्र पूर्णिमा तक की जाती थी। ग्रामादिक दर्शन, भ्रमण, पड़ाव करना-ब्रज यात्रा कहलाता है। यह वैशाख कृष्ण प्रतिपदा से प्रारम्भ करके श्रावण पूर्णिमा तक समाप्त होती है। अलग-अलग मतान्तर भी है। दूसरा विधान:- कोई कहीं से भी अपनी सुविधानुसार प्रारम्भ करें किन्तु उसी केन्द्र बिन्दु पर लौट आना परिक्रमा को पूर्ण माना जाता है।

ब्रज को भगवान श्रीकृष्ण की लीलास्थली एवं नित्य वास स्थली माना जाता है। यह ब्रज क्षेत्र चौरासी कोस की परिधि में स्थित है। ब्रज की चौरासी कोस की परिक्रमा यात्रा सर्वाधिक महत्व की यात्रा मानी जाती है। इस परिक्रमा में भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं से जुड़े स्थल, सरोवर, वन, मंदिर, कुण्ड आदि का भ्रमण किया जाता है। यह सम्पूर्ण यात्रा लगभग 360 किमी. की है, जिसे यात्री/श्रद्धालु पैदल भजन-कीर्तन एवं धार्मिक अनुष्ठान करते हुए लगभग 40 दिनों में पूरा करते है।

वेद-पुराणों में ब्रज की 84 कोस की परिक्रमा का बहुत महत्व है, ब्रज भूमि भगवान श्रीकृष्ण एवं उनकी आदि शक्ति राधारानी की लीला भूमि मानी जाती है। इस परिक्रमा के बारे में वारह पुराण में बताया गया है कि पृथ्वी पर 66 अरब तीर्थ हैं और वे सभी चातुर्मास में ब्रज में आकर निवास करते हैं। करीब 268 किलोमीटर परिक्रमा मार्ग में परिक्रमार्थियों के विश्राम के लिए 25 पड़ाव स्थल हैं। इस पूरी परिक्रमा में करीब 1300 के आसपास गांव पड़ते हैं। कृष्ण की लीलाओं से जुड़े 1100 सरोवरों, 36 वन-उपवन, पहाड़-पर्वत पड़ते हैं।

बालकृष्ण की लीलाओं के साक्षी उन स्थल और देवालयों के दर्शन भी परिक्रमार्थी करते हैं, जिनके दर्शन शायद पहले कभी किए भी न हों। परिक्रमा के दौरान श्रद्धालुओं को यमुना नदी को भी पार करना होता है।

ऐसी मान्यता है कि भगवान श्रीकृष्ण ने मैया यशोदा और नंदबाबा के दर्शनों के लिए सभी तीर्थों को ब्रज में ही बुला लिया था। 84 कास की परिक्रमा लगाने से 84 लाख योनियों से छुटकारा पाने का एक मात्र साधन है। परिक्रमा लगाने से एक-एक कदम पर जन्म-जन्मांतर के पाप नष्ट हो जाते हैं। शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि इस परिक्रमा के करने वालों को एक-एक कदम पर अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है। साथ ही जो व्यक्ति इस परिक्रमा को लगाता है, उस व्यक्ति को निश्चित ही मोक्ष की प्राप्ति होती है।

सभी तीर्थों को ब्रज में बुलाया गया था- यह गर्ग संहिता में कहा गया है। यशोदा मैया और नंद बाबा ने भगवान श्रीकृष्ण से 4 धाम की यात्रा करने की इच्छा जाहिर की तो भगवान श्रीकृष्ण ने कहा कि आप बुजुर्ग हो गए हैं, इसलिए मैं आप के लिए यहीं सभी तीर्थों और चारों धामों को आह्वान कर बुला देता हूं। उसी समय से केदरनाथ और बद्रीनाथ भी यहां मौजूद हो गए। 84 कोस के अंदर राजस्थान की सीमा पर मौजूद पहाड़ पर केदारनाथ का मंदिर है। इसके अलावा गुप्त काशी, यमुनोत्री और गंगोत्री के भी दर्शन यहां श्रद्धालुओं को होते हैं। तत्पश्चात यशोदा मैया व नन्दबाबा ने उनकी परिक्रमा की। तभी से ब्रज में चौरासी कोस की परिक्रमा की शुरुआत मानी जाती है।

किस समय निकलती है परिक्रमा- ज्यादातर यात्राएं चैत्र, बैसाख मास में ही होती है चतुर्मास या पुरुषोत्तम मास में नहीं। परिक्रमा यात्रा साल में एक बार चौत्र पूर्णिमा से बैसाख पूर्णिमा तक ही निकाली जाती है। कुछ लोग आश्विन माह में विजया दशमी के पश्चात शरद् काल में भी परिक्रमा आरम्भ करते हैं। शैव और वैष्णवों में परिक्रमा के अलग-अलग समय है।

घने जंगल एवं कुंजों में घूम-घूमकर तीर्थों को ढूंढ निकाला। वन भ्रमण किया। परिक्रमा विषय में अपने-अपने मतानुसार सबके अलग-अलग सिद्धान्त है। कहा जाता है कि आज से 500 वर्ष पूर्व श्री सनातन गोस्वामी पाद ने परिक्रमा की परम्परा भादौ महीना के शुक्ल पक्ष द्वादशी के दिन मदन मोहन मन्दिर वृन्दावन से शुरू की थी, जो आज तक ठीक वैसे ही निकलती चली आ रही है। इस यात्रा में अधिकतर बंगाल आदि के भक्त यात्री विशेष कर बंगाली भक्त होते हैं।

ठीक इसी प्रकार 500 वर्ष पूर्व 16 वीं सदी में श्रीवल्लभाचार्य प्रभु ने ब्रज यात्रा का विचार बनाया तो स्वप्न अवस्था में एक दिन यमुना जी ने दर्शन दिया। आदेश दिया कि यात्रा में तीर्थगुरू होना आवश्यक है।

श्रीरामकृष्ण आदि ने भी सर्वज्ञ होते हुए भी जगत को शिक्षा के लिए गुरू की मान्यता दी है। अत: प्रभात होते ही श्रीआचार्य प्रभु मथुरा विश्राम घाट गए। वहाँ घाट पर बैठे कितने ही चतुर्वेदीय विप्रो के सामने प्रस्ताव रखा। सभी आचार्य प्रभु के सन्मुख संकुचित होकर नतमस्तक हो गए। बहुत कुछ प्रमाण देकर बड़ी देर बाद समझाने बुझाने के पश्चात् उन्हीं में से दो विप्र "उद्दू और उजागर" जो कि मामा-भांजे थे, चौरासी कोस परिक्रमा के लिए तैयार हो गए। इस प्रकार से प्राचीन परम्परा का निर्वाह करते हुए श्री वल्लभाचार्य प्रभु ने तीर्थ गुरू के रूप में दोनो विप्र उर्दू एवं मामा उजागर को अपना यात्रा गुरू बनाया इसी से इनको बड़े चौबेजी के नाम से जाना जाता था। स्वामी श्रीवल्लभाचार्य के सम्मान देने से और इनकी और भी महिमा बढ़ गई। तभी से ककोर अल्ल और मिहारी चतुर्वेदी सरदार माने गए, और इनको स्वीकार भी किया गया। उन्होंने चौरासी कोस सम्पूर्ण यात्रा निभाई तब से देखा गया कि आज भी कोई पुष्टिमार्गीय ब्रज यात्रा निकलती है तो पहले तीर्थ गुरू रूप में चतुर्वेदीय ब्राह्मणों को यात्रा में अपने साथ लेते है जो कि उन्हीं पूर्वजों के वंशानुगत गुरू होते है। आज भी यह चतुर्वेदी तीर्थ गुरू रूप में श्रीवल्लभकुली तीर्थ गुरू परम्परा को निभाते आ रहे है। इनकी ब्रज यात्रा मथुरा विश्राम घाट से ही श्रीयमुनाजी का आचमन करके प्रारम्भ होती है। इनमें अधिकतर गुजराती भक्त होते है।

पन्द्रहवीं एवं सोलहवीं शताब्दी के मध्य श्रीजीव गोस्वामी की प्रेरणा लेकर दक्षिणात्य पण्डित श्री राघव के साथ श्री निवासाचार्य एवं नरोत्तम ठाकुर इन तीनों ने मिलकर ब्रज परिक्रमा की। कुछ दिन पश्चात् दु:खी कृष्ण दास (श्यामानन्द प्रभु) सेवायत मन्दिर श्यामसुन्दर को लेकर इन लोगों ने मिलकर पुन: ब्रज मण्डल की यात्रा की। यद्यपि लेटकर साष्टांग परिक्रमा का कहीं पौराणिक उल्लेख नहीं मिलता है, फिर भी परम्परा चल गई। जो भारतीय लोकाचार रीति रिवाज भावना का परिचायक भी है।

कहा जाता है कि सन् 1941 के आस पास यतीपुरा में एक बंगाली साधू "बाबा काला कृष्ण दास" रहते थे। सर्व प्रथम् उन्होंने ही गोवर्धन की परिकमा दण्डवती लेटकर फिर चौरासी कोस की दण्डवती लेटकर लगाई। तब से देखा देखी एक प्रचलन हो गया। आज तो भक्त दूध की धार के माध्यम से परिक्रमा करने लगे हैं। वास्तव में परिक्रमा आस्था, भक्ति का अंग है। दो प्रकार से परिक्रमा की जाती है एक अन्तर्वेदी, दूसरी बहिर्वेदी।

अन्तर्वेदी- जैसे चौरासी कोस के भीतर मथुरा, वृन्दावन, गोवर्धन, गोकुल आदि अपने-अपने अलग-अलग क्षेत्रों की परिकमा लगा कर की जाती है।

वहीं बहिर्वेदी- समष्टि स्वरूप में चौरासी कोस जिसमें पूरा ब्रज मण्डल शामिल होता है उसकी परिक्रमा की जाती है। जिसमें अन्दर और बाहर के सभी तीर्थ आ जाते हैं।

विंशतियोंजनानां च माथुरं मम यत्र यत्र पर: स्नात्वा मुच्च्यते सर्वमण्डलम् पातकै: ॥

बाराह पुराण में वर्णन मिलता है कि मेरा मथुरा मण्डल 80 कोस में विस्तरित है, जिसके तीर्थो में स्नान करने से मनुष्य सभी प्रकार के पापों से मुक्त हो जाता है। नोट- मथुरापुरी चार कोस अलग से मिलाने पर चौरासी कोस हो जाता है। श्रीआचार्य नारायणभट्ट ने हरिभक्ति विलास में वर्णन किया है।

"चतुराशीति क्रोशाढ्यं मथुरामण्डलात्क्रोशमेक चतुर्दिक्षु चतुर्दिक्षु विराजिता।
विंशतिकं भजेत् पूर्वादिक्रमताऽगणत्।

केदारनाथ

प्रमाणेन् पूर्व भागे स्थितं
कोणं वनम् हास्याभिधानकम्॥
भागे च दक्षिणे कोणे शुभम् जन्हु वनम् स्थितम्।
भागे च पश्चिमे कोणे पर्वताख्य वनम् स्थितम्॥
भागे ह्युत्तर कोणस्थं सूर्य पतन संज्ञकम्।
इत्येतत् ब्रज मर्यादा चतुश्च ब्रजम्
चतुष्कोणाभिधायिनाम्॥ शिवादयः। 11
ब्रूयुर्देवतास्ते मण्डलाकारमीक्षन्तिम्
मुनयो नारदादयः॥

ब्रजमण्डल परिक्रमा का परिमाण चौरासी कोस है। वह मथुरा मण्डल के चारों ओर बीस कोस से घिरा हुआ है। पूर्व में हास्यवन, दक्षिण में जन्हुवन, पश्चिम में पर्वत वन तथा उत्तर में सूर्य पतन वन माना गया है। इन्हीं चारों कोणों में मण्डलाकार स्थित भूभाग को नारदादि मुनि जन "ब्रज मण्डल" कहते है। सीमा निर्धारण:- हिन्दी भाषा में अति प्राचीन एक दोहा प्रचलित है।

"इत वरहद उत सोन हद, सूर सेन को ग्राम। उत्तर दिशि को कोल कहि, ब्रज चौरासी धाम॥"

वरहद (ब्रजहद का अपभ्रंश) नामक ग्राम हाथरस के पास हैं। सोनहद (सोंध का अपभ्रंश नामक ग्राम वर्तमान हरियाणा सीमान्तर्गत गुड़गाँवा जिले में होडल के पास है। सूर सेन ग्राम - ब्रजेश्वर (अपभ्रंश का वटेश्वर) वाह तहसील जिला शिकोहाबाद में जो आगरा में दक्षिण-पूरब कोण में पड़ता है। कोल प्राचीन अलीगढ़ जिले को कहते है। इसी का वर्णन ग्राउस महोदय ने अपनी पुस्तक मथुरा मैमोयर में सन् 1883 में विस्तार से वर्णन किया है। ब्रह्माण्ड पुराण के आधार पर हरिभक्ति विलास में श्रीनारायण भट्ट ने सीमा सम्बन्धी ऊपर स्पष्ट कर दिया है। भावार्थ समझाते हैं। श्लोक ऊपर दिया हुआ है।

यथा: मथुरा से पूर्व में हास्यवन (अपभ्रंश हसन गढ़) आगरा जिले में पड़ता है। मथुरा से पश्चिम में पर्वत वन (अपभ्रंश पहाड़ी) राजस्थान की सीमा में 'काम-वन' के पास पड़ता है। मथुरापुरी से दक्षिण की ओर जन्हुवन (अपभ्रंश जाजऊ ग्राम) मध्यप्रदेश धौलपुर में पड़ता है। मथुरापुरी को ही केन्द्र बिन्दु मानकर उत्तर की ओर सूर्य पतन वन (जेवन-अपभ्रंश-जेऊर) ग्राम अलीगढ़ के पास पड़ता है। मथुरापुरी को केन्द्र बिन्दु मानकर चारों ओर वन, उपवन, नगर, पर्वत, गाँव, देश आदि के रूप में ब्रज मण्डल के रूप में ब्रज मण्डल व्याप्त है। वन, उपवन, अधिवन, प्रतिवन का पौराणिक वर्णन जहाँ किया गया है, काल परिवर्तनशील होने से सीमा निर्धारण में भी उप- ब्रज के नाम से जाने जाते हैं। जैसे वर्तमान में मथुरा के चारो ओर दतिया (जहाँ मुचकुंद गुफा है) शूर या सर मथुरा (वटेश्वर राजधानी - सूरशेन राजा की) आगे मुरैना तक उप ब्रज की सीमा है। इधर ऐसे ही आगरा, ग्वालियर, भरतपुर, अलीगढ़, एटा, गुड़गाँवा एवं मेरठ आदि तक के कुछ क्षेत्र जहाँ तक ब्रज भाषा बोली जाती है सभी उपब्रज सीमान्तर्गत क्षेत्र जानना चाहिए।'

★★★

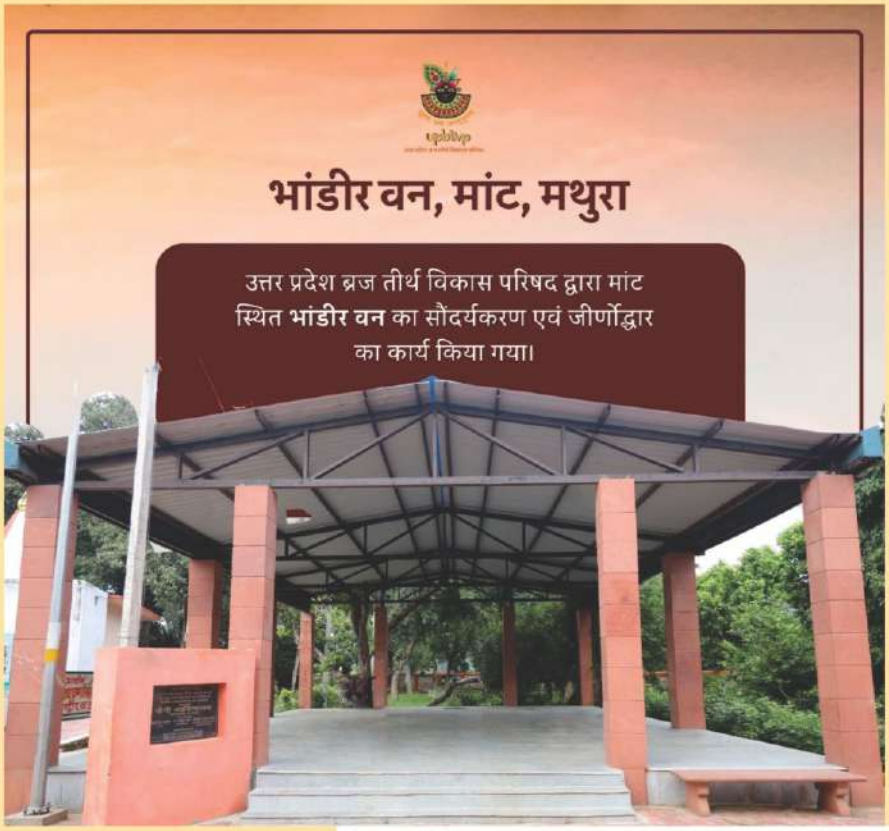
upbbvp
भांडीर वन, मांट, मथुरा
उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद द्वारा मांट स्थित भांडीर वन का सौंदर्यकरण एवं जीर्णोद्धार का कार्य किया गया।

upbbvp
वंशीवट, मांट, मथुरा
उत्तर प्रदेश ब्रज तीर्थ विकास परिषद द्वारा जनपद मथुरा में मांट के पास स्थित वंशीवट की बाउंड्रीवाल का निर्माण कार्य किया गया।
वंशीवट
आपका हार्दिक स्वागत है
उ० प्र० ब्रज तीर्थ विकास परिषद (पर्यटन विभाग के अंतर्गत)